# शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अध्ययन कुँजी

# परमेश्वर एवं आत्मिक क्षेत्र
## अध्याय 1: बुराई का मूल

## परिचय

परमेश्वर एंव आत्मिक क्षेत्र नामक यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल का एक भाग है। अध्यायों की यह श्रृंखला आत्मिक जगत की वास्तविकता का मूल्याँकन करती है–जिसमें भली और बुरी दोनों शक्तियां वास करती हैं। इस अध्याय में बुराई के मूल, शैतान के दण्ड, आत्मिक जगत की वास्तविकता और दैनिक जीवन में पाये जाने वाले दृढ़ गढ़ों, परमेश्वर द्वारा प्रदान किये हुए हथियारों के बारे में, शैतान के खिलाफ परमेश्वर की युद्ध रणनीति, सारी बातों पर परमेश्वर के नियन्त्रण और आलौकिक तरीकों के बारे में बताया गया है जिसके द्वारा परमेश्वर अपने लोगों से बातचीत करते हैं।

विद्यार्थियों की यह मार्गदर्शिका प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस मकसद से तैयार की गयी है ताकि वे स्वयं विशेष शिक्षा का गहनता से अध्ययन कर सकें। www.dehindi.org पर प्राप्त वीडियो और ऑडियो टेप्स को शिष्यता के अनिवार्य तत्व नामक शिक्षा सामग्री के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

---

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

# परमेश्वर एवं आत्मिक क्षेत्र

## अध्याय 1: बुराई का मूल

### यह किस विषय में है?

हम प्रत्येक दिन अपने चारों ओर बुराई के प्रमाण पाते हैं।इस अध्याय का मुख्य उददेश्य यह देखना है कि ये बुराईयां कहां से आती और हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं

### ताकि आप जान पाएं...

लोग बुराई की समस्या से अपने सामान्य जीवन में परेशान रहते हैं। यह बुराई कहां से आती है? यह सब जगह क्यों पायी जाती है? मैं अपने चारों ओर पायी जानी बुराईयों से किस प्रकार बच सकता हूँ? परमेश्वर सिद्ध होकर कैसे बुराई को अनुमति दे सकते हैं? हो सकता है कि आपके मन में पहले भी इस प्रकार के प्रश्न उठें हों। इस अध्याय को मुख्य बिन्दू इस संसार में बुराई या पाप का मूल है, विशेषकर के अदन की बाटिका की घटना। यह जानना हमारे लिए बहुत ज़रूरी है कि परमेश्वर इस संसार में पायी जाने वाली बुराई से कहीं अधिक सामर्थी है, परमेश्वर इस बुराई से लड़ने के लिए अपनी योजना पर काम कर रहे हैं, और यदि हम परमेश्वर से जुड़े हैं तो हमें डरने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। जिस किसी व्यक्ति ने अपने जीवन को प्रभु के हाथों में सौंपा है उसे बुराई में रहने की ज़रूरत नहीं है, और यह हमारी विजय है। इस संसार में बुराई का उदय कब हुआ जानने के लिए आगे पढ़ें।

## शुरूआत करना

**1.** आपके आस पास के संसार में कौन सी कुछ ऐसी समस्याएं है जो बुराई और पाप के कारण होती हैं?

**2.** क्या आपसे कभी किसी ने पूछा है, "अगर परमेश्वर भले हैं, तो बुराई क्यों है"? आप उस प्रश्न की प्रतिक्रिया में क्या कहेंगे?

# अध्ययन

- **एक सिद्ध स्थानः** बाइबल साफ रूप से हमें बताती है कि जब परमेश्वर ने संसार और उसमें हर चीज़ की सृष्टि की, तब वह परिपूर्ण थी। अदन की कल्पना कीजिए, वह वाटिका जहाँ आदम और हव्वा को रहना था। निश्चय ही वह बहुत सुन्दर स्थान रहा होगा! और उससे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक बात यह है, कि उनका परमेश्वर के साथ एक ऐसा गहरा आत्मिक सम्बन्ध था जो कि पाप से भ्रष्ट नहीं था।

  परमेश्वर की सृष्टि में आत्मिक जीव थे – स्वर्गदूत, जो परमेश्वर द्वारा सृजे जाने के समय मे भले थे। परमेश्वर ने पृथ्वी की सृष्टि पाँच दिनों में की, और छठे दिन उन्होंने पुरूष और स्त्री को बनाया। परमेश्वर ने मनुष्य के लिए अपनी सृष्टि पर शासन करने की योजना बनाई (उत्पत्ति 1:26) ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने (परमेश्वर) समस्त सृष्टि के ऊपर शासन किया (भजन संहिता 103:19)।

- **तो क्या हुआ?** बाइबल हमें बताती है कि, इस परिपूर्ण सृष्टि की शुरूआत के कुछ समय बाद, परमेश्वर के द्वारा बनाए गए कुछ स्वर्गदूतों ने उनके विरूद्ध विद्रोह किया। हमारे पास उनके मुखिया के लिए नाम है, शैतान।

  - निम्नलिखित वचनों की पढ़कर बताएं कि विद्रोह करने वाले स्वर्गदूतों ने परमेश्वर के विरूद्ध क्या किया, और उसके परिणाम स्वरूप उनके साथ क्या हुआ।

| | |
|---|---|
| 2 पतरस 2:4 | |
| यहूदा 1:6 | |
| प्रकाशितवाक्य 12:7-9 | |

एक समय पर स्वर्गदूत जिन्हें स्वतंत्र इच्छा के साथ भलाई करने के लिए बनाया गया था, और उन्होंने परमेश्वर की स्तुति करने को नहीं चुना। उन्हे स्वर्ग से नीचे फेंक दिया गया तथा उनकी शक्तियों को सीमित करके छोड़ दिया गया। परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को परमेश्वर का विरोध करने के लिए नहीं, यह विरोध उनकी स्वतन्त्र इच्छा से उत्पन्न हुआ।

  - निम्नलिखित वचनों के अनुसार अदन की बाटिका में सबसे पहले पाप करने वाला कौन था–शैतान, आदम या हव्वा?

| | |
|---|---|
| यूहन्ना 8:44 | |
| 1 यूहन्ना 3:8 | |

- **शैतान की योजनाः** हमें शैतान की मनसा के बारे में नही बताया गया, पर यह साफ है कि वो शुरूआत से ही मानव जाति के विरूद्ध था। शैतान बुराई का मूल है और वह आदम और हव्वा के पास पाप लेकर आया। उसकी इच्छा थी कि जिसे परमेश्वर प्रेम करता है उसे वह नाश करके वह परमेश्वर व उसके लोगों के बीच के सम्बन्ध को समाप्त कर दे।

➢ उत्प,1:26–31, उत्प 2:15 और उत्प 2:19–23 पढें, जिस पुरूष व स्त्री को परमेश्वर ने बनाया था उनके साथ परमेश्वर का कैसा सम्बन्ध था?

| |
|---|
| |

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को केवल एक आज्ञा दी। वे वाटिका के किसी भी वृक्ष का फल खा सकते थे, पर भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष में से नहीं। अगर वे ऐसा करते, वे मर जाते। शैतान उनके सामने साँप के रूप में प्रकट हुआ और उन्हें सुझाव दिया कि परमेश्वर की आज्ञा झूठी थी, और वे निश्चय ही नहीं मरेंगे, बल्कि उनकी आँखें सत्य के लिए खुल जायेंगी।

➢ मना किये हुए फल को खाने के बाद क्या परिणाम हुआ?( उत्प.2:16–17, उत्प. 3:6–7 ) पढ़ें।

| |
|---|
| |

जब उन्होंने उस वृक्ष का फल खाया, वे भले और बुरे से अवगत हो गये और वे अपने किये कामों पर लज्जित थे।

➢ बिल्कुल, परमेश्वर, निश्चय उनके पाप के बारे में जानते थे। जब उनका सामना परमेश्वर से हुआ, आदम ने हव्वा को दोष दिया और हव्वा ने साँप को दोष दिया। आज्ञा न मानने के दण्ड के तौर पर, और जीवन के वृक्ष के फल को खाने से दूर रखने के लिए, आदम और हव्वा को वाटिका से बाहर भेज दिया गया। शैतान ने जो झूठ बोला उसके ये परिणाम थें:

- साँप हमेश शापित रहेगें, और स्त्रियों और उनके बीच बैर रहेगा।
- बच्चे को जन्म देने में स्त्रियों को पीड़ा होगी।
- पुरूषों को कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी, और अपने भोजन के लिए कार्य करना पड़ेगा।
- पुरूषों और स्त्रियों दोनों के ही दिनों का अन्त होगा, और उनकी मृत्यु होगी।

❖ **परमेश्वर से अलग हो जाना:** मृत्यु, जो परमेश्वर ने आदम और हव्वा के पापों के लिए एक दंड के तौर पर घोषित की वह उस श्राप का ही भाग है। रोमियों 5:12 बताता है कि हम सभी इस पापी दशा में हैं और तीन अलगाव का सामना करते हैं:

➢ नीचे लिखे हुए वचनों को पढ़कर बताएं कि वे आपसे पाप के कारण सामने आये भिन्न अलगावों के बारे में क्या कहते हैं:

| | |
|---|---|
| **हम परमेश्वर से अलग हो गये**<br>यशायाह 59:2 | |

| | |
|---|---|
| **हम दूसरों से अलग हो गय**<br>उत्प. 3:15; यहेजकेल 35:5-6 | |
| **हम अपने उद्देश्य से अलग हो गय**<br>प्रेरितों 26:18 | |

❖ **मानव जाति के लिए परमेश्वर की जारी रहने वाली योजना –** परमेश्वर ने जिन लोगों प्रेम किया था वह उनसे कभी अलग रहने के इच्छुक नहीं थे। अनन्त काल तक परमेश्वर से अलग होकर पापी दशा में जीने की कल्पना करके देखिए ! इस तरह देखे तो शाप भी एक आशीष है। अपने पुत्र, प्रभु यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर की योजना अपने लोगों को अपने पास वापस लाने की थी।

➢ **परमेश्वर ने हार नहीं मानी!** परमेश्वर ने अपनी सृष्टि की ओर से मुँह नहीं फेरा। शैतान की शक्ति और प्रभाव के तले हम पाप के दास थे। हमें वापस जीतने के लिए परमेश्वर ने बुराई के विरूद्ध युद्ध करना शुरू कर दिया।

रोमियों 6:17–18, रोमियो 5:8 ,1 पतरस 2:24 को पढ़कर बताएं कि पाप के कारण टूट चुके इस रिश्ते को पुनः जोड़ने के लिए परमेश्वर ने क्या किया ?

| |
|---|
| |

➢ यह जानते हुए कि इस दुनिया में चारों ओर बुराई पायी जाती है और परमेश्वर हमारे द्वारा उस बुराई से लड़ रहे है, हमें किस रीति से प्रार्थना करनी चाहिए? मत्ती 6:13, इफिसियों 6:11–18?

| |
|---|
| |

➢ हमें हमारे लिए प्रार्थना में बने रहना चाहिए कि हम परीक्षा में न पड़ें, वरन शैतान की योजनाओं के प्रति बुद्धिमान रहें और परमेश्वर से सामर्थ्य माँगें। जो लोग पाप के द्वारा जकड़े जा चुके हैं हम उनके लिए निवेदन करने में सक्षम हैं, कि वे मुक्त हो सकें। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि उनके हृदय परमेश्वर की ओर फिरें। जिस दिन हम प्रार्थना नहीं करते , उस दिन हम यह कह रहें होते हैं, "कि आज मुझे परमेश्वर की ज़रूरत नहीं है।" और यही बातें आदम और हव्वा अदन की वाटिका में अपने कार्यों के द्वारा कह रहे थे। परमेश्वर को अस्वीकार करने से मृत्यु, विनाश, अलगाव उत्पन्न होता है, और यह शैतान को एक आधार देता है। प्रार्थना से पूर्ण और सतर्क रहें क्योंकि हम युद्ध में हैं।

## साराशं

- परमेश्वर ने संसार व स्वर्गदूतों को बनाया लेकिन उन स्वर्गदूतों में से कुछ ने परमेश्वर की विरोध किया जिसके परिणाम स्वरूप उन्हे परमेश्वर से बाहर निकाल दिया गया।
- परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए सिद्ध घर होने के लिए अदन की बाटिका का इन्तेजाम किया।
- परमेश्वर का अपनी सृष्टि के साथ एक सिद्ध सम्बन्ध था।
- एक गिरे हुए स्वर्गदूत अर्थात शैतान ने आदम और हव्वा से झूठ बोलकर उनसे परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करा कर पाप करवा दिया।
- शैतान द्वारा पाप इस दुनिया में लाये जाने से पहले यहां कोई पाप नहीं था। वह झूठ का पिता है और हमेशा परमेश्वर व उसके उद्देश्य के विरूद्ध कार्य करता है।
- आदम और हव्वा पर घोषित किया गया पाप सारी मानव जाति की मीरास बन गया जिसमें मृत्यु भी शामिल थी। मृत्यु के भीतर जीवन से अलगाव, परमेश्वर से अलगाव, एक दूसरे से सम्बन्ध का टूटना और उस मकसद से अलग होना है जिसके लिए परमेश्वर ने हमें बनाया है।
- परमेश्वर शैतान को पछाड़ने के लिए अपनी योजना को बना रहे हैं। उसने हमें पापों से स्वतन्त्र करने तथा शैतान से पुनः खरीदने के लिए यीशु को भेजा।
- हमें हमेशा सच्चे मन से प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें पाप और बुराई से बचा कर रखें तथा जो लोग अभी भी उसके अधिकार में हैं हमें उनके लिए भी प्रार्थना करती चाहिए।
- .

# चिन्तन करें

**1.**

दूसरों के साथ हमारे सम्बन्धों को पाप कैसे हानि पहुँचाता है? क्या कोई ऐसा पाप है जिसके कारण मृत्यु, विनाश, और अलगाव उत्पन्न नहीं होते?

**2.**

- शैतान के विरूद्ध परमेश्वर के युद्ध में हम कौन सी भूमिका निभाते हैं? प्रार्थना क्यों महत्वपूर्ण है?